पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

‘समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम’

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

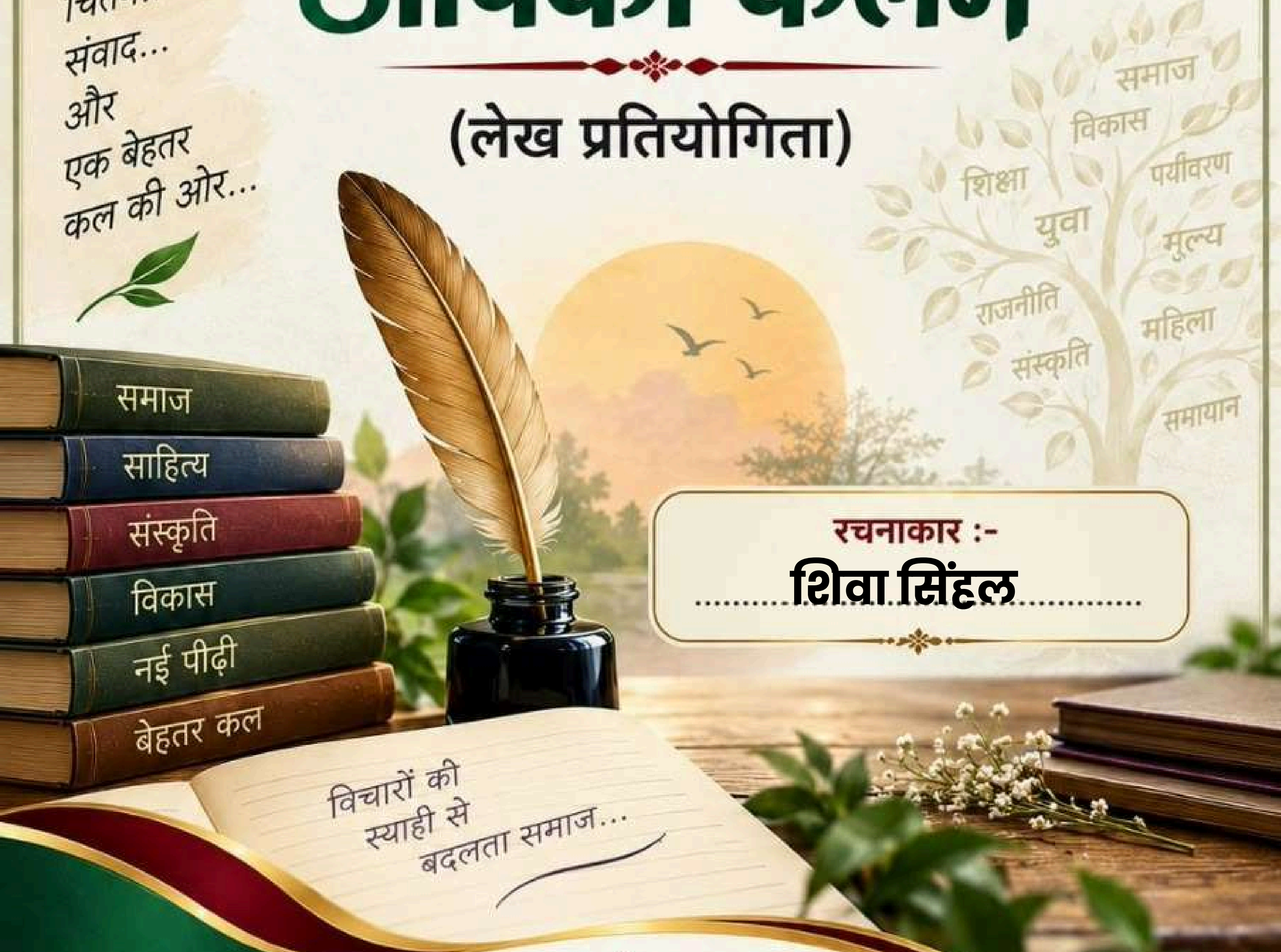

रचनाकार :-
शिवा सिंहल

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक : Webcoodee.com

मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393

ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं। रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका - **शिवा सिंहल**

बदलाव

बदलाव

आज इस लेख के द्वारा हम जानेंगे कि बदलाव जीवन में क्यों जरूरी है, हमें कैसे बदलाव करना है, वह कैसे परिवार को खुशनुमा बनाना है!

दोस्तों, आज के बदलते युग में हम क्या बदलाव की बात करें और हम किससे बदलाव की उम्मीद करें और क्यों करें? इसी कशमकश में बीती उमरिया सारी। आज की परवरिश भी लगती है अपनों को अपनों की महामारी। सभी स्वतंत्र और खुला रहना चाहते हैं।

दोस्तों, कभी आपने सोचा है ऐसा क्यों हो रहा है? इसका कारण क्या है? इसका सीधा-सीधा कारण बस यही है, दोस्तों कि हम थोड़े से पैसों के लालच में बच्चों को बहुत ऊँचा होड़ा-होड़ में पढ़ाते हैं। फिर बच्चे नौकरी करने बाहर चले जाते हैं। मन चाहे उसी तरह जीवन बिताते हैं और अकेले रहते हैं। जब चाहे तब खाया, जब चाहे, जैसा चाहे, वैसा पहना। अब उन्हें बड़ों की रोक-टोक बंदिश-सी क्यों लगती है? क्योंकि बड़ों ने कभी ऐसा पहनावा देखा ही नहीं, ऐसे रहे नहीं। तो उन्हें यह सब अटपटा-सा लगता है और वे सोचते हैं—समाज क्या कहेगा, लोग क्या कहेंगे? इसी कशमकश में अपनी सुखी गृहस्थी में जहर घोलते रहते हैं। खुद भी दुखी और दूसरों को भी दुखी करते हैं। समाज और देश में सभी के परिवार इसीलिए टूटते-बिखरते हैं।

किस देश और किस समाज की बात करें? हमारे घर में जब आग लगती है, तो बुझाने समाज और लोग नहीं आते, बल्कि ताली बजाकर तमाशा देखने सब खड़े हो जाते हैं। तब ये परिवार के लोग ही हमारा साथ दे पाते हैं। इसलिए आगे बढ़कर हमें खुद उन्हें यह कहना चाहिए कि समय के साथ-साथ हममें बदलाव लाएँ। हम बदलेंगे तो परिवार बदलेगा, समाज बदलेगा और हम जीवन में एक अच्छा काम कर पाएँगे। लेकिन हम डर के आगे बढ़ नहीं पाते। तो मैं चाहती हूँ कि दोस्तों, हमें इसी डर को बाहर निकालना है। अगर यह डर बदला, तो सब बदले।

दोस्तों, जब हम जानते हैं कि आज के बच्चे नहीं बदल सकते, उन्हें बदलना बहुत मुश्किल है, तो दोस्तों क्यों न हम खुद को बदलने का एक प्रयास करें!

क्योंकि साथियों, वक्त के साथ-साथ देश बदला, परिवार बदला, परिवेश बदला, परिवार का रहन-सहन, खान-पान बदला, परिवार के लोग बदले, ज्ञान-विज्ञान बदले; नहीं बदले तो कुछ बुजुर्ग लोग।

नहीं रहा पहले जैसा खान-पान, परिवार और लोग? अब तो! बिन बदले ही बदली म्हारे जीवन की जिवारी भाया, भारी पड़गी म्हारी काया। अबे कहीं कहूँ तो किने केहू ने, आज तो सम्मान के भी लागी बुहारी (झाड़ू)। अब तो या डोकरी भी लाग्वा लागी खारी। अबे दाता कैया रेनो, ने कैया जीनो, यूँ घुट-घुट के मरियौ कौनी जावे, नै अबे रात में भूखा नींद कोनी आवे।

आप जानते हैं, टाबर माने कोनी ने, बहूँवा केहवा में चालें कोनी, तो फेर मासा! थे ही क्यूँ? ना प्रेम सूं रोटी जीमण के लिए तो थोड़ो परिवर्तन खुद में कर लो। कभी हम उनकी तरह जीने की कोशिश कर लें। अपने उनकी हाँ में हाँ करके जी लो, गमों को मुस्कान में दबाकर पी लो, वाणी में मिश्री की मिठास घोल लो। थोड़ा बोलो, मगर ऐसा बोलो कि कोई हमें कटाक्ष-व्यंग्य की तरह तीर न मार जाए। तो फिर देखिए, मासा, आपके घर में लक्ष्मी का वास हो जाएगा। अन्नपूर्णा का भंडार भर जाएगा। सारा परिवार खुशी से रहने लग जाएगा।

आप हुक्म चलाकर किसी पर आश्रित बनने की कोशिश न करो, बल्कि खुद का काम खुद करने की कोशिश करो। थोड़ा समय भगवान की पाठ-पूजा करें। घर के काम में हाथ बँटाने की कोशिश करो। उनकी सास नहीं, माँ बनकर मिठास से उनके सिर पर हाथ फेरिए। कभी बहुओं की तबीयत ठीक नहीं तो खुद चाय-नाश्ता बना दें। वो भी खुश, हम भी खुश। खुद में बदलाव लाइए तो देखिए, आज नहीं तो कल परिवार में बदलाव अवश्य आएगा।

बहुएँ खुद कहने लगेंगी कि देखो, मम्मी-पापा का स्वभाव पहले कैसा था और अब कितना बदल गया है। वास्तव में मम्मी-पापा माँ-बाबूजी जैसा प्यार करने लगे हैं। इन्हें सास-ससुर भी अपने माँ-बापू जैसे लगते हैं। इनके आश्रय में हमें मायके की याद नहीं आती। बहू के दिल में ऐसे भाव आने लगेंगे।

ननदें कभी खुद से दिल में यह सोचकर देखें कि हमें भी अगले घर जाना है। यदि हमें भी ऐसी ननदें मिलेंगी, ऐसा व्यवहार करेंगी तो क्या हम सहन कर पाएँगे? नहीं ना! तो बस यही सोचकर भाभी की बहन बनकर उनके साथ चलें। उनकी हर बात में रोक-टोक न कर ननद बनने की कोशिश न करें। वो जितना समय मायके में रहें, खुशी से रहें, मुस्कुराते रहें। फरमाइश पर फरमाइश कर हुक्म न चलाएँ। बराबरी के कदम से कदम बढ़ाकर भाभी के काम में हाथ बँटाएँ। ननदों जैसा रूप दिखाकर घर में झगड़ा कराना छोड़ दें।

हमने देखा है, अपने इन्हीं व्यवहार के कारण मरते दम तक अपने मायके का रास्ता नहीं देखतीं और भाभियाँ कभी एक मुद्दत तक ननदों को नहीं बुलाती हैं। अपने मायके में अपनी जगह बनाने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन लाना बहुत जरूरी है। आप घूमने कहीं जाएँ, भाभी को ले जाएँ, शॉपिंग पर ले जाएँ, कभी पिक्चर दिखाने ले जाएँ। इस तरीके से भाभी के दिल में अपनी जगह बनाएँ और मायके में आने की राह बनाएँ, जिससे शादी के बाद ससुराल वालों के ताने न सुनने पड़ें कि तेरे मायके वाले तुम्हें क्यों नहीं बुलाते। तो हम शर्म से उन्हें कुछ जवाब भी नहीं दे पाएँगे।

इसलिए ननदें, एक अच्छी बहन बनकर सुखी परिवार का आनंद उठाएँ। अच्छी बहू बनने के गुण यहीं से सीखकर जाएँ, तभी तो हम ससुराल में मायके का मान बढ़ा पाएँगे और सास-ससुर की सेवा कर पाएँगे।

अब देवर और बच्चों में भी यही व्यवहार और यही संस्कार देने चाहिए। बच्चे बड़ों का आदर करें, उनसे उसी तरीके से बात करें। देवर, भाभी को दिखाओ नहीं तेवर, क्योंकि भाभी बड़ी हो या छोटी हो, भाभी अपने काम की चाबी होती है।

हमें अपनों की डाँट से बचाती है। उन्हें भी आत्मसम्मान उतना ही चाहिए, जितना कि हमें। जब तक हम किसी को आत्मसम्मान देंगे नहीं, तो आत्मसम्मान पाने की कोशिश किस प्रकार कर सकेंगे?

आप एक भाई या अच्छा दोस्त बनने की कोशिश कीजिए! इसीलिए आप कभी मार्केट जा रहे हैं तो पूछिए, "भाभी, बाजार से आपको कुछ लाना है? चलिए, मेरे साथ चलिए, मैं आपको वहाँ तक छोड़ देता हूँ या लिस्ट दे दीजिए, मैं सामान ले आता हूँ।" तो देखिए, आपकी भाभी कैसे मुस्कुराएगी और आपके साथ किस तरीके से पेश आएगी। आपके घर में घुसते ही गिलास पानी का और चाय का कप तैयार रखेगी।

यदि आप अपनी भाभी से इतना प्यारा व्यवहार चाहते हैं तो पहले अपने आप में परिवर्तन लाइए, क्योंकि आपकी भी श्रीमती आने वाली है। यदि आपकी श्रीमती भी ऐसे ही तेवर दिखाने लगेगी तो बताइए, फिर आप क्या करेंगे? ये सब हमारे लिए एक सबक, सीख है, जो हमारे परिवार को आत्मसम्मान दिला सकती है।

अब जब बहू को ससुराल में इतना सम्मान मिलता है, तो बहू का भी फर्ज बनता है कि वह भी बड़ों को उतना ही सम्मान दे, जितना कि वह चाहती है कि मुझे सम्मान मिले। बड़ों को समय पर चाय, नाश्ता, दवा, खाना तथा समय-समय पर उनका ख्याल रखें। एक अच्छी बहू होने का फर्ज अदा करें।

अपने इस प्रकार के बदलाव के तरीके से वह अपने माँ-बाप की शान में चार चाँद लगा सकती है। वो बिखरे हुए परिवार को जोड़कर एकजुट होकर महकते गुलाबों-सी बगिया महका सकती है। वो अपने परिवार को सुखी बनाकर सबके साथ खुश रह सकती है और औरों को भी यही सीख देकर टूटते हुए परिवार को बदल सकती है।

इस प्रकार घर बदला तो परिवार बदला, समाज बदला तो देश भी बदलेगा। सभी सखियों को किटी पार्टी में भी यही अलख जगाएँगे। हमें भी अपनों में कुछ परिवर्तन लाना चाहिए।

दोस्तों, एक आगे बढ़ेगा तो उसको देख दूसरा भी बढ़ेगा। 1-1 करते 11 होते हैं और 11-11 करते 1,111 होते हैं। अगर यह बदलाव इसी तरह चलता रहा तो हम उम्मीद करते हैं, दोस्तों, कि आज की जनरेशन में भी हम बदलाव ला सकते हैं।

मैं उम्मीद करती हूँ, दोस्तों, कि इन विचारों से अगर किसी का परिवार सुखी बनता है तो मेरी कलम के लिए यह बहुत खुशी की बात है। और इसी उम्मीद के साथ मैं अपनी कलम को यही विश्राम देती हूँ।

- शिवा सिंहल

लेखक परिचय

नाम – शिवा सिंहल

निवास – आबूरोड

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ.......... **शिवा सिंहल** ....जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "**एक लेख प्रतियोगिता**" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना

समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं संस्था
डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक... लेखन से परिवर्तन तक...